

नार्थः दृष्टकालकिमर्थः चतुर्मासविनागार्थः वात्राद्यन्ति
मध्याह्निकिमर्थः महावाग्निमुद्गार्थः तद्विप्रपितृकस्तथावता
र्थः व्याघ्रजिनाकिमर्थः गच्छत्स्वप्नविहृत्यर्थः मूढुना
नाकिमर्थः चन्द्रसूर्येतरार्थः ॥ ० ॥ निदर्शनीयवक्राम्बु
दर्शनकूपरुद्राक्षर ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दर्शनकृतसुखाकृत॥ ... ॥ गुरु

श्री जगन्नाथश्रुतिकृतिका श्री कथंतिरवनसुचित्रसुवृद्धिरनं

विष्णु गुरुनमः वक्रविन्दः दासनः

2625 I

321
Matiānāwala
darsana

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ



ॐ पतियविश्व नमस्तुते ॥
स त्रैलोक्य नथत्थ ॥

उ नमः श्रीवत्स वा वाके ॥ सिधूत्रयूजा विधिमाह ॥ ॥ कावा
सा विधिथं ॥ अयनाय ॥ ॥ अयना विसासन ॥ महासधु
लवनापंगयं ॥ अथायगनयं ॥ ॥ दिनसु ॥ अष्टिमीम
धुल ॥ सिधूत्रमधुलयासंगय ॥ ॥ अष्टिलनिकलसुन
उलकंगय ॥ अथययय ॥ मित्रादकासंगय ॥ ॥ कीक
स ॥ मूत्रपानुय ॥ ॥ आदूचरुद्राव ॥ कासुग ॥ नीत्रसुग
आदूपाग ॥ हादूपाग ॥ द्याय ॥ आदूचुग ॥ अंगचुगय ॥

सिधूत्रमधुलसुशयनयूसंगय ॥ यथायानन ॥ अथनिग
दा ॥ आदूस ॥ अरु ॥ डा ॥ वा ॥ नय ॥ सिधूत्रमधुसुशया ॥ ॥
यकुजाविरुका ॥ महासधुलसुशयगुविरुका ॥ ॥ अथ
सुग ॥ अथकुग ॥ एसा ॥ अथसुग ॥ साहनीरुका ॥ महासधु
लसं ॥ सिधूत्रमधुवसंतिहिंनरुयसुग ॥ ॥ महाववि
दिगववि ॥ ॥ अथनिथयनायनकाव ॥ ॥ सुशोघ ॥ गुत्रया
दाघ ॥ यूजाएविजायक ॥ ॥ अथन ॥ नात्रयूजा ॥ नात्रकाय ॥ सिधि

समय ॥ ॥ गीत ॥ अक्षसिंहाय ॥ ॥ गुप्तमधुल ॥ विसृज्य ॥ सिधुव
युजा ॥ ॥ अक्षिसमय ॥ ॥ वरुणाकार ॥ गीत ॥ अनिव ॥ ॥ दगु
विरुय ॥ ॥ गीत ॥ अक्षिनिद्रसयुजा ॥ ॥ गीतवकवधु ॥ ॥
द्रुमयुजा ॥ महामधुवसं ॥ सिधुवमधुलसंतिहिनयाय ॥ ॥ गीत ॥
यवकुरु ॥ एतन्मास ॥ निहिनं ॥ मानियुजातिहिनं ॥ ॥ थन ॥ गीत ॥
ऊर्यवाङ्मया ॥ ॥ सिधुवमधुलयुजा ॥ थन ॥ युष्मासमयकार ॥ गुप्त
यानरुक् ॥ ॥ थन ॥ साहाययुजायाय ॥ ॥ थन ॥ दवयुजा ॥ म

हामधुल ॥ सुरुयुजायाय ॥ ॥ थन ॥ दमायधराडाव ॥ गुप्तद
ध ॥ ॥ थन ॥ मधुल ॥ नीगुविं ॥ युदकधा ॥ मन ॥ द्दं द्दं कायाक
नायादि ॥ धूपयाय ॥ थन ॥ दाल ॥ अय ॥ थन ॥ दालषाखध ॥ द्वायाया
नययवसयद्ध ॥ थन ॥ दिगवधन ॥ सूरतिस्सुद्ध ॥ यादि ॥ ॥
थन ॥ वउदालसंयुजा ॥ दिगदवयुजा ॥ सवादवयुजा ॥ मधुलनियु
त्रीसंयुजा ॥ धूनकाव ॥ थन ॥ गुप्त ॥ सिधुवमधुलयाद्व ॥ धयानरु
या ॥ ॥ थन ॥ दिगववि ॥ मरुववि ॥ दगुवविविश ॥ ॥ स्थानम

न ॥ गुत्रयूजा ॥ दक्षना ॥ दक्षीणसंक्रय ॥ संक्रयसंक्रय ॥ ॥ सिधुत्रमः
 धुलसंक्रयकाकार्यमद्रुया ॥ ॐ ॥ थुगि ॥ द्दिद्रुसकमेथथथुया ॥
 ॐ गिसिधुत्र ॥ यूजाविप्रिसमाय ॥ ॐ ॥ ॥ गु ॥ ॐ ॥ थनः ॥ विः
 ॥ ॥ गधिसकमेथथथुया ॥ ॥ गुत्र ॥ याद्रुविआडाव ॥ सिधयनि ॥
 आयावनयाडावगा ॥ थथुया ॥ ॥ यान ॥ द्दमधुलथियकं ना ॥ थ ॥
 नयाऊन ॥ स्था नयाय ॥ निषयाय ॥ धूययाय ॥ थनः ॥ गुत्रमागा ॥ स्था
 नकाडाव ॥ द्दाद्रुविआय ॥ ॥ मधुलनिगुत्रिसंक्रय ॥ ॥ मन ॥

ॐ यविमरु ॥ रगवनमहा माद्रुयवतलं ॥ यत्रमसुखा गयसुखा कुम ॥
 सिधियुं ॐ ॐ वंदा ॥ वसु मां ऊ विनाथदा ॥ ॥ थनः ॥ यदक्षना ॥ ॥
 निगुत्रि ॥ मधुलसं ॥ मन ॥ ॐ ॐ कात्राकृनादाया ॥ दिहिकात्राया
 नक ॥ लितावऊयदनृथं ॥ वऊय ॥ गयमधुल ॥ ॥ मधुलनिगु
 त्रिसं ॥ धूययाय ॥ थनः ॥ वउद्रावसुयवतल ॥ मन ॥ यत्र ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥
 मन ॥ दक्षि ॥ ॐ ॐ नमानयद्रुयाटय ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ मन ॥ यत्रि ॥
 ॐ ॐ आआ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ मन ॥ उरु ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ थनः

यस्मिन्सदावशासन ॥ मन्त्र ॥ उं द्वा ला घा न य य वे स य दूं ॥ ॥ थन
दि ग व थ ॥ मन्त्र ॥ उं सु सु नि सु सु दूं दूं ॥ उं गृ द्वा १ दूं दूं ॥ उं गृ द्वा
प य १ दूं दूं ॥ उं आ न य द्वा ए ग व न वि श्या ग्रा ऊ दूं दूं ॥ ॥ थन
व रु द्वा व संपू ज्ञा ॥ सिं धू म धु ल स रु ॥ दि ग द व ॥ सा ग्रा द व य पू ज्ञा ॥
थन ॥ व रु या न न क्वा य ॥ ॥ सिं धू व म धु ल स नि क्वा य ॥ मू व म धु लं
सं क्वा य ॥ मन्त्र ॥ उं य व सृ षा न मं सृ स्वा स य ॥ सृ व ल वि त वि त्रा स न मि ते न
सा मि ॥ ए ग व ल कं उं दूं वं द्वा ॥ की की १ य मि क्क क्क सृ मा ऊ लि ना थ द्वा ॥

यं या य द्वा व य पू ज्ञा ॥ थन लि स क नां ॥ म द्वा म धु व स या य द्वा ॥ थन ॥ उं द्वा
स न न स्यं ॥ आ या य य व स ॥ आ वि र य द न या द व य द य ॥ मन्त्र ॥ आ द्वा व
मं १ आ द्वा व म्मा र्थ स ए व ॥ ध मि गु द्वा ॥ थने ला न्मा ॥ व रु ग्रा ऊ ॥ न मा न म ॥
का य ग्रा क वि के ॥ स गु द्वा ॥ आ का ग ॥ स म ता ल य ॥ नि वि का ल ॥ नि ग्रा य ॥
स ॥ व रु का य न मा न म ॥ वि के ना धा ॥ ग ना ग न ॥ गृ ष्ठ प्रिय ष ॥ य थ द
नू त्र ॥ आ उ द न ॥ म द्वा का य ॥ आ के स ॥ न मा न म ॥ आ का ग ॥ का य स ए
॥ आ का ग ॥ वा क् व के क ॥ आ का ग ॥ वि के ध मि ग ॥ व यो य द न मा

मम॥ वरुसुखः मरुयानः अकाशः यथोविश्वप्रकः समुद्रदः
 वायुगः दसयूजाः नितानमः॥ वागद्वयमहाभारुः भारुवकुनाः यदग
 क॥ अकाशः अउल्याग॥ दगयूजानिनाकुमः॥ मादुमाज्जः यविनामिः
 यानागः यथवकुः वृद्धसोः लागः शुद्धासोः द्याययूजाः नलाकुमः॥
 वाधिरिक्कः विभावाकः धर्मवकुः युवकुः॥ कायवाधिरिक्कः सुशुद्धः व
 रुयानः नमानमः॥ ॥ ॐ ॥ धनः कुरुकनकन॥ यकिविमूया
 दि॥ उं सुव्रतथागतकायवाधिरिक्कयुनंमनवदनाकयामी॥ ॥ महाम

नतांरुत उद्धरानशयकं॥

२ धनतान

कुलसुखा॥ ॥ धन॥ सिधूत्रः भारुतिः साधनयायशुभा॥ ॐ ॥
 मजानथं॥ धनः सिधूत्रः भारुतिः अगमनमंः सकलमिधके॥ * ॥ धया
 त्रिवं॥ मजानथंः मरुजानरुय॥ नवाहात्र॥ उपाध्वानः नदियुवः
 य॥ ॐ ॥ उं नमः श्रीवकुयागीत्यो॥ नलायगासनम्ः पिरुवनः महि
 माः वृक्षमांत्रकागमिः वात्राहिसूत्रदीयां॥ सयविः विदलिनंः नामनाः
 थंः यत्रायां॥ नखेः स्वदंगः याः नोः नत्रकमत्रः सित्रधवा॥ वासदीहिः
 अउरिः सर्वकणिः निगुलंः यत्रगुः दसत्रकंः विरुनंः रुद्रकादं॥ ॥

[illegible]

धन॥ विहावदाव॥ सिष्यादावत॥ गाकुनरा॥ धन॥ उपाधन॥ साधुद
 वन॥ यवत्रवत्रि॥ याग॥ विषा॥ उ॥ आवकुंशागीदीर्घ॥ ॐ॥ मंत्रविज्जीजीहः
 दैः॥ रुद्ररुद्र॥ समसर्वसुखानाश्रमनिकूपसुखा॥ ॥ धन॥ गंधात्रीत्राग
 कृष्णककार॥ धन॥ गुप्तायाहाविष्कावक॥ धन॥ नदिपत्रये॥ ॥ उ॥ नमः
 शीयमनृत्यश्चत्राय॥ नृत्यं॥ धनं॥ पुक्व॥ मूत्रकुं॥ मूत्रावत्राहं॥ नदवन॥
 मां॥ धि॥ रं॥ यागद्वैगुनदनु॥ विगति॥ नमन॥ कं॥ नम॥ याद॥ रु॥ रं॥ ग॥ न
 सि॥ ल॥ ग॥ न॥ म॥ र॥ व॥ रु॥ डं॥ रु॥ हि॥ रु॥ सां॥ गु॥ रि॥ हि॥ मू॥ डा॥ वं॥ नं॥ व॥ कि॥ क॥ मि॥ व॥
 न
 या

प्रिनमः मूखाः रुल्यं रुद्रकावः ॥ ॥ धनप्रि ॥ वागः गीतः रुद्रसि
त्र ॥ गुद्रनिर्गयाय ॥ ॥ धनः लसाहाय ॥ ॥ यासासंसात्रवके
स विनययतिमत्रं सुस्मिथा गालरुनाः साधिरु मयसादाः दिशतु नि
ऊरुवंः स्वामिनानिष्ययः नत्रयथा लवयंः समुदयमिसुखं
कल्याणाजालमूकं दूशोके साधियमः नित्रसि सविनयं सजु
प्रसवे कालं ॥ ॥ ॥ ॥ धनः प्रुधयाय ॥ उं कीयासकात्रायः गुद्रमा
गा एदोलकायः ववनकमत्रायः अर्धुयमिद्रसादा ॥ धनः ॥ अरिषा

कविरा ॥ अनंयायाकरुना ॥ ॥ धनः गच्छप्रिकाय ॥ गीतः ॥ निरुवन ॥
गुल्लन्यायाय ॥ सिधं ॥ धनः ॥ यूजायाय ॥ उमियवय ॥ सिधन ॥ नमस्ते
मुद्रनमानम ॥ यवगयस्ययं मरुनाथं मरुमाद्रूपवत्रं ॥ अशमगरु
त्रं रुमं मरुलं डि विनं वमः अशवृक्षकृपाजगावृक्षयुगासिंसावन ॥ ॥
धनः नडावगुवाय ॥ ॥ धनः सिधं वमकुलसुवाद्रुगुत्रिः यगु =
रुयाव ॥ निष्ययनिदसुनविय ॥ विरुथूनके लून १० ॥ यूजाः उमि ॥
॥ ॥ नखाजीवकृपात्राहिः मनुमूकिडि धज्वरी अशं नवत्रदाहिः

मधुलयाद्वत्क्षेत्रयश्चा ॥ ॥ मूत्रमधुलसुनयमय ॥ ॥ धन ॥
मात्रकाकर्मः सकलं सिद्धमधुलसु-यायश्चा ॥ ॥ धनविज ॥
इन्द्रात्रयाः द्रवतः जिकनयात्र ॥ ॥ धनः सकलश्चा ॥ ॥ कस्तूर
सूत्रमतिप्रिय ॥ ॥ लसदात्मापूरयद्रुम् ॥ ॥ निषवदम्-गुरु-ग
हंमदासुरवेनि ॥ ॥ शिगुत्र-द्रवणालयायाइका-जितवयावया
इन्द्रजिष्ठा ॥ ॥ धनः पञ्चमकनविय ॥ ॥ उंसर्वशागविर्गम
यादयामि-सूत्रमसमयसुंदा-सिद्धिवज्रयथसुखं ॥ ॥ लजिष्ठा ॥

धमदायानस-प्रसयादन-इविगतास-समस्तयागंगनल-हानः
त्राग-सिद्धिदाहानहानवज्रसुयाफवायव ॥ ॥ मूत्रलसर्वेनथाग
नाप्रिस्तिनीरविष्ठासि-नवसुंशदं-सर्वथागनयत्रमयद्रुम्-मधुल
युविष्ठासवकयं-नवगुद्धानयमिनि ॥ ॥ रुसिष्ठा ॥ धनिमूत्राणि
खमा-द्रुयनिमूत्रमस्तथागनन-मूत्रिस्तानयायू-॥ रुसिष्ठा न-ध
वज्रवात्रारियायवत्रकथादाकं-मधुलयागलरुदय ॥ ॥ सूयाद्व
नं-सकलसमयव ॥ ॥ धमूत्रावत्रकथादनयाग-गुद्धानंनयमा

॥ ॐ ह्रीं ॥ ॥ वराकक्षत्रके ॥ ॥ उं खद्युवाहूं ॐ गिय
० नत्रक ॥ उं आखं वीत्रहूं ॥ गदकमनिकाभूय नत्रयविश्या ॥ ॥
धनः दध्वावाजय ॥ ॥ उं महासूत्रनसूदरसूनायासूखावकुसल
युसिधिसां ॥ ॥ गीत ॥ ॥ किं कन्द ॥ अथवाः ॥ गिदवंसं ॥ गुरुन
यथाय ॥ गगययुनामंकात्रयन् ॥ ॥ उं सर्वेनथागगः यूकाय
स्मानाय आत्मानं निर्यागयामि ॥ उं सर्वेनथागगनवकुसलनदि
सिद्धसां ॥ ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ धमकुलयाससविज्ञक ॥ ॥ अक्षायाग

थागगसकेः याधनायाहांः अक्षायागगगसंः ॥ अक्षिस्मानः
याहं नयत्सं नक्षयमाः ॥ ऊनं सलीत्रः ॥ मानुद्वरुवया ॥ १ ॥ उं सर्वेन
थागगूऊयस्मानः यात्मानं निर्यागयामि ॥ सर्वेनथागगवेत्रावनन
थागगः ॥ ऊअक्षिस्मानकल्यायाहं यत्संक्षयमात्रः ॥ ऊनगत्रीलंलं
कुरुलया ॥ २ ॥ उं सर्वेनथागगयूकारिषकायात्मानं निर्यागया
मि ॥ उं सर्वेनथागगवक्षिस्मां ॥ ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ वलसंक्षुद्रनथा
गगसंः ॥ ऊन अरिषकविषं ॥ अक्षिस्मानयायमात्रः ॥ ऊनसूत्रीत्र

लंदाहवया ॥ ३ ॥ उं सर्वेन थगना ॥ यूजायुवर्कनाया सांनति
योगयामि ॥ उं सर्वेन थगनवडु ॥ मयुवर्कनाया ॥ ॥ शयुव ॥
अभिगारन थगनसुक ॥ उयासनायाडा ॥ सिद्धियुत्तनरुयमाय
ऊनसुत्रीलमागुलंदाहवया ॥ ७ ॥ उं सर्वेन थगनायडाकर्म
॥ ॥ आत्मनंति योगयामि ॥ उं सर्वेन थगनवडु कर्मकूदमां ॥ ॥
शयुव ॥ अमायसिद्धिग थगनसं ॥ वक्रयायमाय ॥ थ ॥ यत्रमथत्र
यूजायायनिमिर्कित ॥ ऊनं सुत्रीललंदाहवया ॥ १ ॥ पुन ॥ यू

वेदाय ॥ उं गुपूयवधायायसुनायासांनंति योगयामि ॥ उं सर्वेसुल्य
विग्राहायासांनंति योगयामि ॥ ॥ शयुव ॥ उं यथात्रया ॥ यत्रन
याद्रकानमसात्रयाडं याठ जिषाडि ॥ वक्रयादान ॥ युत्तनरुयमा
य ॥ ऊनयुवयात्रसु ॥ सुत्रीललंदाहवया ॥ ७ ॥ सिलस ॥ वडु
नथिय ॥ ॥ जियजिवडु ॥ ॥ ॥ अयमसमयावडुमूद्रा
नं सुवययदिलमिमकसुविद्रुयान् ॥ ॥ शजिष्य ॥ अमाव
ऊ ॥ श्रीवडुसुलथका ॥ ॥ मिक् ॥ सित्रसंविन ॥ थ ॥ गुत्रीसु ॥ यु

कासयागसा - थ क्रयलमञ्चत्र - वस्यत्र - वत्र हासं - विहावि
क्रायुषा ॥ नूगत्रस - वऊनधिय ॥ ॥ रुदयवऊं वृत्ता ॥
॥ ॥ वऊसुलसुयर्ग - यरुदयसुसवस्तिन - निहिंयगकृत्त
यायान् - यदिकृयातिमंतयं ॥ ॥ रुषिष्य ॥ श्रीवऊसुलं -
ठिमि - नूगत्रसविआन - समसुहान - गल - गाना - थसमसुया
गंगनल - हान - युकासयागसा - थ क्रयत्रमञ्चलसं - नूगत्र
वत्र हासं - विहावि क्रायिव ॥ ॥ थन - यश्चमृग - विय ॥ ॥

अयं यनावकं वासि - समयेमिकुमाग - समयसंलकृतं सिद्धि - वि
ववजामृनादकं ॥ लतके ॥ ॥ थन - धूपदान ॥ ॥ शुंनः
गानकत्रं - आकात्रजामिनाएयं निष्ठाया ॥ सदेनथगनाश्चिषि
गवऊसुलमआविसुयु ॥ ॥ थन ॥ नासुयाय ॥ मनु ॥ ॥
रुदिलदं ॥ सित्रसिवंदं ॥ क - धृयका ॥ पादशावंडं ॥ ॥ घघ
दयन ॥ ॥ थन ॥ गीन - नमदं ॥ ॥ अथस ॥ मनु ॥ ॥
॥ मिधूपदान ॥ ॥ थन - पूषयागन ॥ ॥ लानकाय ॥ ॥

वदन्तं तदुक्तं

कौटिल्य

वा दश

॥ गथानूवयुत्ता कामाः यथैतः स्वयं संयुगाः षट्काः ॥
 संधा गिदवीः यो विनिविशमानवीः यो वाहिया मिनीदवीः सोः
 रुनी संयत्री नथाः स्यात्रिधी मरुदवीः संगमिनी नथा यथाः यच्चि
 का षट्दद्यातः दिवर्गजाय एषा ॥ ॥ चउपी ० समायुक्ता ॥
 यूलिजात्रा चत्री नथाः श्रीरुनः उदियाना चउपी ० ० मिस्सुना ॥
 ॥ धर्मसंश्रगः निमानः मरुदसूयः चउययं ॥ चउययकु
 ० ० मिस्सुना ॥ ॥ काला मात्रा मरुदकाले १ वजावली समायुक्ता ॥

७) यथैतदुक्तं किं हि तान् न जन्म स्रज्जिदो जोगमउ वलं न निदिदि सिद्धि तु नी वलं

किमिः कीः उः यः यः यः यः ॥ यः सः सः सः

चउययसीदलाश काय मरुलि समायुक्ता ॥ ॥ ० ० मिगुक्तमनं यकं ॥
 वरुसलसूखावरं ॥ ० ० ० ० ॥ स्रज्जिदो ॥ ० ० ० ० ॥ ० ० मि सिंभूतः
 मधुलदगनविधि ॥ ॥ ० ० ० ० ॥ ॥ उं नमः श्रीवज्रयोगिनी ॥
 ॥ ॥ धर्मोदया संगन कामयुपीः संज्ञानयूधुन्कलविगीः दिन
 न्यमात्रा दिनसूनु विगाः नमा मिगवकुलिः शिखरी गां ॥ ॥ यूर्य
 यय ॥ स्रज्जिदो ॥ ० ० ० ० ॥ ॥ यययं मधुलं मधुः प्रिस्सुनियमि
 मादगयंति ॥ ॥ गुरुः नारिस्सुः यं काय प्रिदलं ययः स्रज्जिदि

स्रज्जिदि

उशा ना ॥ ॥ उशा ना न व र क ना नि वू भू ग ॥ उशा ना भय ॥ ॥

वस्म द ना वा यू व ड - उ वू न या डं था हा व ड ॥ ॥ वि नू भू ना हा

श ला ॥ ॥ रु नां य व सा ना व थं - रं ड थ व ॥ ॥ द ग्मा वि रु मि

या ॥ ॥ मि या थं रं ड थ व - का थं या ड ॥ ॥ गे ला क म हि ना ॥ ॥

गे ला क म हि ना थ या डं या ड ॥ म् म् - म् - या ना व या मा म् रु या व थ ड ॥

॥ ॥ वि पू व भ ला यू व ग ॥ ॥ हा नि म् ॥ रं नं - म् म् य भ ना हा य कं

वि का क ॥ ॥ वू डो वू डो हा न व ग ॥ ॥ वो डो हा न म् व म् या डं वि

[illegible]

गुरुदासाय ॥ आर्द्राकार ॥ सिद्धसकुलसखाइगुनी ॥ गुप्ता
 गासकाय ॥ ॥ धनः पुष्टासक्रयविरः सिद्धयान ॥ ० ॥
 धनः सुरुशुद्धन ॥ गुप्तागाययिनिन ॥ ॥ गीत ॥ कावयि ॥
 कवकाय ॥ माकशिनीकाय ॥ ॥ धनः धनमूनियतिह्यंनः गु
 प्तगाययुद्धाय ॥ ॥ गीतः वकीशुसिद्धः सकस्यंनः स्वाडः
 आशगविय ॥ नमस्तुत्राय ॥ ॥ धनः दमायनयाडाव ॥ ॥
 धनः सुद्धागाय ॥ गीतः वकिवृकुल ॥ ॥ धूमिः धूनकावः

दत्तस्य ॥ ३ ॥ अथ संविज्ञा ॥ ॥ धन ॥ धनमृष्टियनि ॥ सग्नन
 विय ॥ ॥ ॐ धर्मो ह्यादि ॥ ॥ धन ॥ स्नानग्न ॥ गुत्रयुजा ॥
 सूत्रधुदिदकना ॥ धन ॥ गनयुक्त ॥ धूमामागिच्छाय ॥ ॥
 माकसिप्रिकाय ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ मिष्टियुत्राहिकविधिसमा
 क ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ३ ॥ नमः शीवकुसवत्राय ॥ ॥ यथायं मधुलंगुक्त ॥ वृक्षानां का
 यमर्कमं ॥ एकगिष्टगमानम ॥ सुकनाङ्गलिप्रधया ॥ ॥

२ जनवायुमृष्टिपथाकाका

नगानिमधुलदगनाय ॥ निमिर्कथं ॥ पूर्वदिग्गुण ॥ व ॥ धुगुग
 ॥ ॥ नदीगी ॥ ॥ ॐ नदीगी ॥ ॥ ॐ नदीगी ॥ ॥ ॐ नदीगी ॥ ॥ ॐ नदीगी ॥
 ननकं ॥ यं कायववायुमधुलं ॥ नीलवर्धु ॥ धनारं ॥ वल्लयगाका
 लकिगं ॥ यं कालाप्रिष्टिगं ॥ ॥ गृष्टायप्रिष्टिकायववायुमधुलं ॥ गि
 कान ॥ प्रकवर्धु ॥ कालाकिगं ॥ प्रंकाप्रिष्टिगं ॥ ॥ गृष्टायप्रिः
 वंकाय ॥ आयमधुलं ॥ वल्लयगाकालं ॥ ॥ गृष्टायप्रिः ॥ यधुकिगं ॥ वं
 काप्रिष्टि ॥ ॥ गृष्टायप्रिष्टिकायववायुमधुलं ॥ वल्लयगाकालं ॥

यीगवर्धुं ॥ सुवजांकिगं ॥ यंकात्राप्रिष्टिगं ॥ ॥ गणापत्रि ॥ सुंकात्रः
 क्षमसूय ॥ यउवतुमयं ॥ अष्टशृणाप ॥ अष्टिगं ॥ सुंकात्राप्रिष्टिगं ॥
 ॥ ॥ गणापत्रि ॥ सुंकात्रघ ॥ विश्ववजं ॥ वत्रगकधे ॥ सुंकात्रघ ॥
 दूदागीवलावयर् ॥ ॥ वनस ॥ गणापत्रि ॥ यंकात्रघ ॥ विश्व
 दलेयम ॥ अष्टदलकमलकध्रुका ॥ केशलानिगं ॥ गम ॥ अलि
 कालिजागं ॥ ॥ गदपत्रिलविमृष्टिगं ॥ गत्यलिधग ॥ श्रीरुद्रकः
 वरु ॥ वरुसुखयुयं ॥ नानावस्मिनिश्वत्रनं लावयर् ॥ * ॥ युरं
 एगवतं कुरुवर्धुं यउवक ॥ यमिसूर्यमि ॥ एगं ॥ अदशरुजं ॥ ओश्रीटासनसु ॥ किनी ॥
 मरुहोत्रव ॥ कात्रिगोला ॥ काकमान ॥ वेऊवा ॥ गोकात्रिगिगं ॥ सुऊदयनवदेव ॥ अष्टिगं ॥

मगकस ॥ रुद्रय

यत्रस्तानवर्धु ॥

यथा ॥ ॥ यत्रस्तानवर्धु ॥ केमलवत्र ॥ लयूव ॥ अष्टगश्वराहायका
 व ॥ विश्वक ॥ समुदितगऊ ॥ सुदृष्टकले ॥ यत्रकिं वंदमाया ॥ रुद्रथया
 वविष्कक ॥ समवसुला ॥ सुंसात्रहिगथयादं विष्कक ॥ समाप्रिगुन ॥
 समाप्रिविद्या ॥ थूयावविष्कक ॥ अष्टयहान ॥ यत्रंखिनमरुवसुवीय ॥ सु
 सुवीनमंजिनवत्रहृषिगदेरुधव ॥ गथागगयाथिमं ॥ गथागगयाथि
 नसुवीय ॥ गथागसुग ॥ सम्यकसंवाप्रिहानवाक ॥ कद्रुधवसु ॥ मरुहक
 ननावर्धुं सुयावविष्कक ॥ मुदितविकाप्रिग ॥ यमिसुक्तीगावविष्कक ॥

धर्मननु ॥ धर्मयागुहदय ॥ त्रिहवननऊरं ॥ छगः मध्वः यागावस-
मंमंयावविआक ॥ कृमिहक ॥ वज्रः घट्टः धवयावविआक ॥ शुन
नयंकि ॥ रुउसागथूकाः म हागून्यविआक ॥ जीवडसुखयत्रमागुन ॥
रुसकन्याडकयाथथूकाः रुउसागथूका ॥ ॥ यूरंयथां ॥ ॥
वकसमप्रस ॥ ॥ ॥ नगुसूदलकमलं ॥ ताकिधीश्वरथावामा-
खधुलाहाउरूयीधी ॥ वस्यूरुदिसस्मानः सर्वसिद्धियदायिका ॥ ॥
वृषुः ह्यामः वकः चिग ॥ ४ ॥ एकवकाः वउरुडाः वामे ॥

कयात्रः खडागंः दक्षिः (धः) उमत्रुकरिंका ॥ चिनगाः मूककेनया ॥
आलीरासनकिना ॥ दष्टकयात्रवदना ॥ यं अमूडाविरुषिगा ॥ ॥
विदिकुवलाया ॥ वाधिविरुंनः वज्रसाः यं अमृगः पशुपुदियेश्व-
सिद्धिप्रसवदंती ॥ हरेयूरु निमूडलनादि ॥ वज्रकयाठकः समय
कयागकः विसमयकयागक ॥ समयविसमयकयागक ॥ यून ॥ का
नः वाकः चिगः वक ॥ ॥ सर्वगथागगहकार ॥ यूनवउविंगः
मिगी ॥ २४ ॥ दवदवीआवासिग ॥ यूनः दगहमिसूरु ॥ रुव

न० प्रियं क० संवत्सराकार ॥ ययभूत ॥ यून० यथम० विगुयकु०
मूल० नीलवर्धु० नीलवजावलिद्वगं ॥ यूर्व ॥ यूलिमवयपी० ॥
स्वधुकपावदव ॥ ययधुदवी ॥ सिवसि ॥ कपावस ॥ उरु ॥ जालंध्रीः
पी० ॥ मरुकेकावदव ॥ रधुद्विदवी ॥ निखायां ॥ वसूपात्र ॥ यकि ॥ डा
दियानपी० ॥ केकेलंकदव ॥ यरामनिदवी ॥ दक्षिधक० ॥ उवद्वस
यं ॥ दक्षि ॥ अर्धदवपी० ॥ विकटद्विदव ॥ मरुनासादवी ॥ एरु ॥
विधुवस ॥ यययय ॥ विगुयकु ॥ यमूदिगारुमि ॥ ४ ॥ विदिग

स ॥ अर्ध ॥ ययवलिपी० ॥ ग्रावरीदव ॥ वीलमनिदवी ॥ यामकधु० ॥
स्ववद्वसयं ॥ नेमय ॥ अभवरीपी० ॥ अमृगारदव ॥ रववलिदवी ॥ ए
मय ॥ कानिषाग ॥ वायूय ॥ दवकावपी० ॥ वयययदव ॥ लकवरी
दवी ॥ वययय ॥ मिषाविष ॥ ०० ॥ माववपी० ॥ वयययदवगा ॥
इमकायादवी ॥ कययय ॥ कयनिकं ॥ अय० नेय० वाय० ०० ॥
यिगवकु ॥ विमगारुमि ॥ ४ ॥ ०० निविरेवकुकेववि ॥ ८ ॥
विगीयवाकवकु ॥ वकवधु० वकयसावविद्वगं ॥ यूर्व ॥ कामवपी

०॥ अक्रुत्रिकदव ॥ नलावमिदवी ॥ ककशा ॥ राक निरु ॥ उरु ॥ ६
अ ५ नवी ०॥ वरुमटि वदव ॥ महाकं का वदवी ॥ सुनशा ॥ इरु निरु ॥
यू ३ ॥ वाक वक्र ॥ एलक विरु मि ॥ यरु ॥ गिगक नीपी ०॥ महा
वीलदव ॥ वायू वगदवी ॥ नाह ॥ यरु ॥ दकि ॥ का गलपी ०॥
वरुदं कालदव ॥ गुरादिदवी ॥ नासिका ग्य ॥ का गवाह ॥ य ३ ॥
वाक वक्र ॥ अविम निरु मि ॥ विदि गग ॥ अ ५ ॥ कलिं गयी ०॥ सु
रुदादव ॥ सा मादवी ॥ मू ३ ॥ वा वरु ॥ नेच य ॥ लं वा के पी ०॥ व

अय रदव ॥ सु रुदादवी ॥ क ६ ॥ कथु ॥ अ ५ ॥ वाक वक्र ॥
सुईरु याह मि ॥ वायू ॥ का र्यापी ०॥ महा र वदव ॥ रु य क धू
दवी ॥ रुदय ॥ नू गदस ॥ ० ॥ अ ॥ रु मा वरु पी ०॥ विरु या कदव ॥
रु गान नादवी ॥ म ३ ॥ दाक ॥ वा ३ ॥ वाक वक्र ॥ अरि मूषि
रु मि ॥ ॥ ० ॥ मि वाक वक्र रु वरु मि ॥ १ ॥ ॥ रु मि य का य य
क ॥ शु क वरु ॥ शु क वक्रा वलि रु ॥ यू ३ ॥ यं ग य र्या पी ०॥ महा व
लदव ॥ वक्र वगदवी ॥ अ ५ ॥ उरु ॥ गुरु दव गयी ०॥ वल वरु

देव ॥ स्वधुवा हादवी ॥ युष्म ॥ मार्ग ॥ यूः ३ ॥ कायवकु ॥ इगमा
रुमि ॥ यः ३ ॥ सो लासयी ० ॥ हरंगीदव ॥ सो धिनिशदवी ॥ उवा ॥
३३३३ ॥ दक्षि ॥ सुवर्धु दीययी ० ॥ आकागगरदव ॥ वक्रवः
धुनीदवी ॥ उद्याया ॥ स्वयम् ॥ यः ३ ॥ कायवकु ॥ अयवाहमि ॥
॥ ॥ विदिगम् ॥ अय ॥ नगवयी ० ॥ श्रीरुलूकदव ॥ शुवीमाः
दवी ॥ पादागुवीम् ॥ उमियविनिम् ॥ नैऋत्य ॥ सिः ॥ आयादवी ० ॥
यमनृत्त ॥ अयदव ॥ महावमादवी ॥ पादपृष्ठ ॥ अयिम् ॥ ॥

अय ॥ नैऋत्य ॥ कायवकु ॥ साधूमिहमि ॥ ॥ वायव्य ॥ मैत्रीयी ० ॥
वैशाखनदव ॥ वक्रवर्धुनीयदवी ॥ अयुगय ॥ बालगयाभुगुमास ॥
० ॥ ॥ दूवनायायी ० ॥ वक्रवर्धुनीयदव ॥ महाविश्यादवी ॥ जानू ॥ यू
० ॥ ॥ वाः ॥ ० ॥ कायवकु ॥ धर्ममद्याहमि ॥ १० ॥ २४ ॥
० ॥ मि कायवकु हयवि ॥ ० ॥ कायः ॥ वाकः ॥ विरु ॥ वक्रहयवि ॥
॥ ॥ यूरं ययं ॥ नकवका ॥ यश हजा ॥ विनेगा ॥ उनामकूग
यनका ॥ आबिगध हजदसन ॥ वक्रवक्रवधुधवा ॥ वासः ॥ स्व

दसहमी ॐ उत्तरीमहा

घंग ॥ दक्षिण ॥ उमरुकेनथा ॥ यंश्रुमूडाविहसिगा ॥ आलिधाम
नसहिगा ॥ ॐ गि ॥ निवकुहवमि ॥ ० ॥ यमादिता ॥ विमत्रा ॥
युलकमि ॥ अविममि ॥ हंडंडया ॥ अविमूषि ॥ इवंगमा ॥ अरवा ॥
साधूममि ॥ धम्ममेघा ॥ दण्डमिसंयुद्ध ॥ ॐ ॥ पूर्वोदिवउ
का लम् ॥ काकासा ॥ नीला ॥ उलकासा ॥ अमा ॥ अनासा ॥ वका ॥
शुकासा ॥ यीगा ॥ वउदेवीनथाउकं ॥ वकवका ॥ दिहजा ॥ अः
लिंननकेपालहसा ॥ इवगडेनि ॥ कर्तिका ॥ ग्रिनगा ॥ ओउवृषि

नीरु

धम ॥ रूजासनसहिगा ॥ मूककुशवित्राङ्गिता ॥ अद्वयं गसंमाप
ना ॥ दिगमवप्रवापया ॥ कछिका ॥ यउकयूर ॥ कधुलं वक्रसुय
कं ॥ कधुलं कंगिगामाला ॥ मसला ॥ घृघ्रात्रवे ॥ ॥ विदिः
इयलात्रय ॥ यमदादि ॥ यमइमि ॥ यमडुही ॥ यममथनी ॥ शोकोर
यामनाहवा ॥ युगासना ॥ मरुधाता ॥ हलार्थकप्रक्षयगा ॥ कानदि
गवर्धुविशुद्धिगा ॥ सर्वसांभव ॥ वीरयागीनीनां ॥ ललाटवडमात्रा
प्रया ॥ ॥ विशुद्धिमारु ॥ वउसं ॥ वउ ॥ न्द्रिय ॥ वउहगहला

ॐ ॥ समाधि ॐ त्रिय ॥ साध ॐ त्रिय ॥ काय ॐ त्रिय ॥ वाक ॐ त्रिय ॥

॥ ॐ श्रवण सा समा रथ ना ॥ ॐ श्रवण सहा वडा ॥ ॐ श्रवण वाक गं मा ॥

श्रवण ॥ वीर्य वत्र ॥ स्मृति वत्र ॥ समाधिवत्र ॥ एह वत्र ॥ यत्रि ॥ ० ॥

वलाव स्मृति ॥ उय स्नान विगुडा ॥ ॥ साउगजा गिनी यत्रि वत्र ॥

साउगजा गिनी कथं देवी ॥ ॥ ^{विन}वा न्या देवी ॥ ^{वस}वं गा देवी ॥ ^{विथ}मृदं गा ॥

देवी ॥ ^{यग}मूल जा दे ॥ ^{दिना}हा सा देवी ॥ ^{नात्या}वा सा देवी ॥ ^{स्नान}वडा सा देवी ॥ ^{गात्र}गी गा देवी ॥

नृ सा देवी ॥ ^{नय}यू सा देवी ॥ ^{स्नान}यू सा देवी ॥ ^{धूप}दी सा देवी ॥ ^{मन}गं सा देवी ॥ ^{सुगंध}वडा ॥

४२ वक्रयणिका व साहिना ४

^{श्रुत}सा देवी ॥ ^{धर्म}वसा देवी ॥ ^{धर्म}धर्मा देवी ॥ ॐ मि साउगजा गिनि ॥ ॥

वउत्र सं ॥ वउडा लं ॥ वउला वध सं रुगा ॥ वउ सं रुगा समा युका ॥ अरुः

रुगा य साहिना ॥ ॥ ^{स्व}स्वर्घु यनिका पीगा ॥ ^{रुगा}रुगा र्घु सा वम धिगा ॥

वक्रानी लव धुं ॥ ^{कंठा}कंठां गा व समा युका ॥ ^{कर्म}कर्म गा सं रुगा साहिना ॥ ॥

अरु सं ग र्घु युका ॥ ^{कि}कि नी जा ल सं ग गा ॥ ^{यध}यध ॥ युगा का सं सा हा ॥

रुगा वम र्घिगा ना ॥ यत्रि ॥ ॥ ^{अरु}अरु कु सं ॥ ^{समा}समा युका ॥ ^{निर्मा}निर्मा न

वक्र रु म धिगा ॥ ॥ ^{अरु}अरु य या का व रि ॥ ^{यमा}यमा वरी ॥ ^{वडा}वडा वरी ॥

का वाणी रता ॥ अरु वी ० वाक पात्रं ॥ न शा स्त्री ॥ येन विदुय ॥ अरु
सिद्धा समायुक्त ॥ नम संयुक्तं मधुलं ॥ यूर्यं ॥ यज्जं ॥ ॥ नग ॥
विस्तृत नयन ॥ पूर्व ॥ ॥ अदिलोक पात्र ॥ यद्योग भग्नान ॥ लोहि
पा सिद्धा ॥ धर्मय लयेन ॥ धीषय द्द ॥ न वा वगिनदि ॥ वा शुकिना
ग ॥ गडिग मय ॥ वस्त्रय नीद वी ॥ दक्षि ॥ उम ॥ वाक पात्र ॥ ग
कात्र लो व भग्नान ॥ विद्या सिद्धा ॥ विगुय ल ॥ येन ॥ अरु ॥ वृद्ध ॥
वृद्ध ल ग ॥ नदि ॥ गदक ॥ नाग ॥ यक्षिग ॥ मय ॥ वा वाहि ॥ दे

वा ॥ यक्षि ॥ वरुन लोक पात्र ॥ का वां दू ॥ भग्नान ॥ कर्तुण सिद्धा ॥
वत्तय लयेन ॥ कंकरी ॥ वृद्ध ॥ का वरी ॥ नदि ॥ कर्क ग क ॥ नाग ॥
धाष ॥ मय ॥ ॥ अदय धी द वी ॥ उरु ॥ वृद्ध ॥ लोक पात्र ॥ कं व क
लीष ध ॥ भग्नान ॥ गंग विद्या सिद्धा ॥ मनियु ल ॥ येन ॥ यूर ॥ वृद्ध ॥
कक्षि ॥ नदि ॥ यम ॥ नाग ॥ अरु ॥ मय ॥ मारु भरी द वी ॥
अरु ॥ अग्नि ॥ लोक पात्र ॥ अरु हास ॥ भग्नान ॥ सिद्धि पा ॥ सिद्धा ॥
का नायु ल ॥ येन ॥ वृद्ध ॥ विमत्र ॥ नदि ॥ म हाय म ॥ नाग ॥

घन ॥ मद्य ॥ को मा त्रिदयी ॥ ने अय ॥ वा दग ॥ ला कपात्र ॥ लक्रि व
 धु ॥ म म म न ॥ व त्रि पा सिद्धा ॥ स न य रा ॥ ये य ॥ क दं व ॥ वृ द ॥ पि पा सा ॥
 न दि ॥ दू व ॥ ना ग ॥ य मा न ॥ म द्य ॥ वी बु वी द वी ॥ वा यू य ॥ रु ग ॥ वा क
 पात्र ॥ धा मां ष कात्र ॥ म म म न ॥ ना त्रि पा सिद्धा ॥ सू व धु य रा ॥ ये य ॥
 व ग ॥ वृ द ॥ हि म व गि ॥ न दि ॥ दू त्रि क ॥ ना ग ॥ व स न ॥ म द्य ॥ वा मू
 धु द वी ॥ ॐ मं ॥ वे मूं ॥ ला क पात्र ॥ कि त्रि कि त्रा य म म म न ॥ म दि
 पा ॥ सिद्धा ॥ ग वृ नि य रा ॥ ये य ॥ व क गि ॥ वृ द ॥ गी ग य गि ॥ न दि ॥ मं

३५२

स पात्र ॥ ना ग ॥ य द्य ॥ म द्य ॥ म हा व श्री द वी ॥ ॥ न ना धा व मू स्या ॥
 क वं धा दि ॥ स मा वृ ता ॥ ॐ ॥ न ना नि म धु ल द ग ना य ॥ नि मि ति र्थ ॥
 य वृ द्धि ला ल ॥ व (धु ग स म म न ॥ न दि मि त्र ॥ दू ग व मू व ॥ वा सि ग ॥ ० ॥
 ग गु न या ग यि ॥ ग ग ॥ या ग का ल स रु सा रु य ॥ मू द न यां हा नं क ला ॥
 य रं र मि ला ॥ ॥ ग ग मू द वी ॥ ० हि ग ॥ सि द्धा ग ॥ धे स रु सा व नं क ॥
 ला ॥ ॥ क म य ॥ य वृ द्धि यी ॥ ० ग ग ॥ ॥ ग द ॥ य वृ द्धि यी ॥ ० हि
 ग ॥ मू द सि द्धा ग ॥ धे ॥ क रुं रा मा न व ॥ कि म र्थ ॥ म ग द्धि गि ॥ ॐ ॥

निवदत् ॥ ॥ नदायूर्यं वदनि ॥ रुसिद्धश्च ॥ श्रीचक्रसम्प्रदयः
 नायः आगतावर्यं ॥ ॥ सिद्धश्च ॥ साधूश्मानवयूषाकं वर्यं
 यत्नात् ॥ ॥ रुगता ॥ नयूर्यं वदनि नागच्छ ॥ ॥ ॥ नदायूर्यं
 ॥ निवदत् नं गूला ॥ यूर्यमा ॥ ननगता ॥ ॥ ननु ॥ अष्टलाकपात्र ॥
 हवनसंयाक ॥ ॥ ॥ नदायूर्यं लाकपात्रोदायिगं ॥ कस्तूरामलायूर्य
 ॥ समाश्रम ॥ ॥ मर्थ ॥ ॥ रुगता ॥ यूर्यमागच्छ ॥ ॥ नदायूर्यं
 विद्विहता ॥ किं विनक्ति ॥ यूनन् ॥ सं हसनगच्छनि ॥ पृथिव्या

रुसांजलिकृता ॥ अष्टोत्राकपात्रस्य ॥ पादो निवसावद्विहता ॥ यूर्यं वदा
 द ॥ ॥ रुसांजलिकृता ॥ नवदगनार्थ ॥ ॥ रुगता ॥ यूनन् ॥ श्रीचक्रसं
 मप्रदगनार्थ ॥ आगतावर्यं ॥ ॥ ॥ नदालाकपात्रावदाद ॥ ॥
 साधूश्मानवयूर्य ॥ आगतागच्छ ॥ नवयूर्यं यत्नात् ॥ रुगता ॥ ग
 रुश्चक्रसं मप्रदगयति ॥ ॥ ननु ॥ श्रीचक्रसं मप्रदगन
 किं रूगं ॥ नानावत्संरूकं ॥ नानावत्संरूकं ॥ नानावत्संरूकं ॥ नानावत्संरूकं ॥
 नानावत्संरूकं ॥ नानावत्संरूकं ॥ नानावत्संरूकं ॥ नानावत्संरूकं ॥

नमस्तुभ्यं ॥ नमः ॥ येन दशनरुलं ॥ प्रहृतं ॥ अथ यमिया कात्र ॥
लंघयित्वा ॥ ॥ नमः ॥ गृहकात्र ॥ हित्वा ॥ काकाननादवीसंमुखिन ॥
काकाननादवीउवाच ॥ किंमर्थं ॥ आगच्छमानव ॥ ॥ गदायूरं ॥
कृणुञ्जलिवन्दय ॥ ववा ॥ श्रीवकुसुमत्र ॥ दशनारय ॥ वन्दनारय ॥ य
यूपासनारय ॥ आगच्छाम ॥ शीदवीयश्च तथ गतेषु ॥ आमाननिर्यो
गदीत्या ॥ आगतावर्यं ॥ ॥ नमः ॥ काकाननावाच ॥ साधुश्च प्रिनः
गच्छ ॥ अथ ह्यंदर्जयति ॥ नमः ॥ यश्चात्राकिनिदवीसंमुखिन ॥ ॥

यूरं ॥ वन्दमि ॥ ॥ अकिनिदवी ॥ उवाच ॥ आगच्छा गच्छ ॥ मानव ॥ अ
हिकृक ॥ दूयागगा ॥ ॥ ॥ एका ॥ यउपात्रेषु ॥ अमृतं ॥ धुषू ॥ यंश्च
दूग ॥ वजामृगादकगृहित्वा ॥ ॥ दं वजामृगलपिव ॥ ॥ गिरनित्वा ॥
ददत् ॥ ॥ ॥ गदायश्चरसिमादगित ॥ गिष्ठावाच ॥ शीदवी ॥ नमः
प्रसिद्धिं कारु ॥ दवीवाच ॥ शीगिष्ठा ॥ यूरं ॥ नजानागि ॥ नमः ॥
सि ॥ श्रीमहामधुल्ल ॥ जागि ॥ नमः ॥ जागिदशनमार्गन ॥ यत्रमः
जागयाक ॥ वान ॥ ॥ शीगिष्ठा ॥ यूरं ॥ श्रीवकुसुमत्र ॥ दशनारय ॥

१॥ गंगादिष्वक॥ गुरुसद्वत्तुमेक॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मकूटध्वजं ॥ अटनमकूटयादं ॥ अर्धचन्द्रतल्पप्रपात्रयादं ॥ विंशति
विश्ववर्तन ॥ आलयमानयादं विष्णुक ॥ उष्णकटशीघ्रत ॥ त्रास्य
नदयकाव ॥ प्रसनं ॥ संस्कृतायादं विष्णुक ॥ आद्यतमो मयप्रध्वजं ॥ आ
द्यतमो न ॥ निवासनयादं ॥ आदं ॥ गगनं नवनिप्रमात्रा ॥ गगनक्रिया
वर्द्धि ॥ मूढुमात्रा न ॥ कोखायावविष्णुक ॥ षष्ठमूढासु ॥ अहि ॥
षष्ठमूढानक्रियावविष्णुक ॥ त्रिकि ॥ कूधुप्र ॥ कठिनायक ॥ मख
त्रा ॥ रसीकि ॥ षष्ठमूढायुकिकिना ॥ ॥ ॥ ॥ रुनायत्रं ॥ श्री ॥ वड
मा

वायाहि ॥ त्रकवधु ॥ आदूखात्र ॥ नकमूखा ॥ कृपाखात्र ॥ द्विर
जा ॥ नकायाहाथ ॥ विष्णु ॥ स्रष्टात्रमिखा ॥ मूक ॥ केश ॥ स
यत्रदंगयावविष्णुक ॥ वामरुजालिंगीनकयात्ररुहा ॥ दलपात्राहा
थन ॥ यत्रमयत्र ॥ आलिंजनयाहाव ॥ कयाठकद्वीविष्णुक ॥ अ
दयात्राहाथन ॥ स्रष्टात्रमूडयत्रपात्र ॥ आठककि ॥ अग्रियाथां ॥
कादुलमानरुवगं ॥ ॥ अंघादयसमावद्य ॥ कूट ॥ नेपानं ॥ यत्र
मयत्री ॥ आलिंजनयादं ॥ महासूर्य ॥ आलास्यावयादं ॥ स्रष्टात्र

सदाकृत ॥ ॐ ॥ शान्ति ॐ ॥ न विष्णु ॥ यथा ॥ शान्ति ॥
 शुद्धि ॐ ॥ यथा ॥ ॐ ॥ यत्तु वक्तुं किमर्थं ॥ यत्तु विष्णु किं ॥ विष्णु
 द्वर्थं ॥ साकि ॥ यादिक ॥ यथा ॥ अविवात्र ॥ का ॥ गिरि वक्तुं किमर्थं
 हनर विष्णु वक्तुं सा न ॥ हनरर्थं ॥ यथा हनर विष्णु द्वार्थं ॥ वक्तुं यत्र ॥ यथा
 त्रमिगा ॥ शुद्धि ॥ यथा यत्र ॥ गज वक्तुं विष्णु द्वार्थं ॥ जगत्सार ॥ वि
 ना सार्थं ॥ दमत्र किमर्थं ॥ गज न ॥ सर्वे वक्तुं यथा यत्रार्थं ॥ यत्र सकि
 मर्थं ॥ काय ॥ वाक ॥ विष्णु ॥ दास ॥ दनार्थं ॥ ककि किमर्थं ॥

यत्तु दनार्थं ॥ ~~विष्णु वक्तुं किमर्थं~~ ॥ ~~विष्णु वक्तुं किमर्थं~~ ॥
 सकिमर्थं ॥ गिरि वक्तुं यथा दनार्थं ॥ स्वर्ग गकिमर्थं ॥ वासि
 विष्णु ससुखार्थं ॥ पाश किमर्थं ॥ सम्यक् हनर वक्तुं ॥ पाश
 किमर्थं ॥ सर्व सखा कृपा त्रसुखार्थं ॥ वक्तुं ससुख किमर्थं ॥ सर्व विष्णु
 ल्य नाशु नार्थं ॥ विष्णु वक्तुं शुद्धि ॥ गिरि गिरि विष्णु वक्तुं किमर्थं
 सर्व सखा यज्ञान यत्र विष्णु नाम नि ॥ जिल नि ॥ भूद्वय किमर्थं
 हान काकि दनार्थं ॥ उटा मक्तुं किमर्थं ॥ सर्व विष्णु साध